[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

इक्कीसवीं शताब्दी : पहचान के बिन्दु

कविता चौहान

शोधार्थी, पी.एच.डी. ;हिन्दी

हिन्दी विभाग

कुरुक्षेत्र विष्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

21वीं शताब्दी वर्ष 2001 से शुरू हो गई है। 21वीं शताब्दी का आगमन एक नई वैचारिक सोच के साथ हुआ है। यह उपलब्धियों की शताब्दी भी कही जाती है। इस शताब्दी में विष्व के सभी देषों ने अपने तरीके से विषेषताएँ हासिल कर ली हैं और कर रहे हैं। आज विज्ञान, तकनीक सूचना एवं जनसंचार के साधनों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न कर दी है। जिससे सम्पूर्ण विष्व एक छोटे गाँव का रूप ले चुका है। वर्तमान युग मे नई–नई तकनीकों के माध्यम से हम घर बैठे ही किसी प्रियजन से बात कर सकते हैं। विष्व की किसी भी भाषा का ज्ञान आज के युग में प्राप्त करना तकनीकी के माध्यम से आसान हो गया है।

वर्तमान में संसार में भौगोलिक दुरियां केवल इतिहास भर बनकर रह गई है। डॉ0 पुष्पाल सिंह लिखते हैं कि ''इक्कीसवी शती का वास्तविक प्रारम्भ 11 सितम्बर 2001 ;9/11द्ध को हुआ जब अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर की ऊँची मीनारों को आतंकी शक्तियों द्वारा ध्वस्त कर दिया गया। वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर की मीनारों को ध्वस्त किया जाना विष्व इतिहास की कोई सामान्य घटना नहीं है। इसकी सातवीं बरसी पर लिखते हुए शषि थरूर इस दुर्दान्त घटना से ही इक्कीसवीं शती का प्रारम्भ मानते हैं।''[1]

इक्कीसवीं सदी में भ्रष्टाचार भी हर तरफ दिखाई दिया चाहे वह धार्मिक, आर्थिक या फिर राजनैतिक क्षेत्र हो। सभी ओर भ्रष्टाचार का बोल–बाला है। भ्रष्टाचार को कम करने के लिए वर्तमान सरकार ने नोटबंदी को अपनाया और कैसलेस पेमेन्ट को लागू किया है।

21वीं सदी में सूचना क्रांति, भूमण्डलीयकरण, वैष्वीकरण के प्रभाव ने सामाजिक संस्कृति को व्यक्तिगत संस्कृति में बदल लिया है। वैज्ञानिक और तकनीकी क्रांति ने मषीन को मनुष्य का पर्याय बना दिया है। आज का मनुष्य मषीन की भांति ही हो गया है जिस प्रकार मषीन में मानवीयता, अपनापन नहीं होता है। वह संवेदनाषून्यता होती है। आज का मनुष्य सद्भाव को भूलकर स्वार्थपन, कुंठा, संत्रास, अजनबीपन से ग्रस्त है। इक्कीसवीं सदी के पहचान बिन्दु इस प्रकार हैं।

1. **सोच में परिवर्तन :** आज के मनुष्य की सोच में परिवर्तन हो चुका है। वह आज धन को ही सबकुछ मान बैठा है। आर्थिक, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक दृष्टि से सोच में परिवर्तन हो चुका है। प्राचीन काल में मनुष्य अपने कर्त्तव्यों को समझता था और अधिकार प्राप्त करता था। आज के युग में न अधिकार न ही कर्त्तव्यों को समझा जाता है। आज परिवार का विघटन हो चुका है। संयुक्त परिवार में एकल परिवार, एकल परिवार में आणविक परिवार, लेकिन आज तो लोग लिव–इन–रिलेषनषिप को अपनाने की ओर अग्रसर हैं। इस प्रकार सोच में परिवर्तन के कारण परिवार विघटन की ओर हैं। धार्मिक दृष्टि से भी मनुष्य की सोच में परिवर्तन है। धर्मगुरु धर्म के प्रति कर्त्तव्यों का पालन करते थे लेकिन आज धर्मगुरु धर्म की आड़ में कुकर्म करते हैं। धर्म आज के भोगवादी वातावरण में व्यवसाय के रूप में उभर कर सामने आया है। पिछले कुछ समय में घटी घटनायें इस ओर संकेत करती है। प्राचीन समय में ऋषि–मुनि पर्णकुटियों तथा कंदराओं में लोक–कल्याण की साधना में लीन रहते थे लेकिन आज तो संत–महात्माओं के जीवन से सत्य सादगी, सदगुण ब्रह्मचर्य तथा अनुषासन कोसो दूर है तथा इन साधुओं के जीवन में गृहस्थाश्रम के सभी सुख मौजूद हैं।

धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता को फैलाया जा रहा है। इक्कीसवीं सदी के उपन्यास धर्म में आई विकृत्तियों को उजागर करते हैं। 'दामिनी जिंदा है' ;गोपाल कृष्ण शर्मा 'फिरोजपुरी'द्ध उपन्यास में लेखक ने दर्षाया है ''धर्म के आडम्बर पनपते रहें। टेलिविजन की स्क्रीन पर धर्म के गुरुओं का बोलबाला रहा वहीं ज्योतिष के ढकोसले चलते रहें। अन्धविष्वास में अबोध बालाओं की बलियाँ लगती रही, हस्त रेखाओं और जन्मकुण्डलियों के मीडिया प्रोग्रामों में काफी समय दिया गया। यन्त्र–मन्त्र के बेढंगें व्याख्यान होते रहे। महंतों के डेरों में बलात्कार होते रहे।''[2]

2. **बौद्धिकता :** बौद्धिकता प्रवृत्ति ने हमारे जीवन मूल्य को हानि ही नही पहुँचाई बल्कि मनुष्य कुंठित व संत्रस्त भी है। षिक्षा के प्रचार–प्रसार ने हमारे अन्दर के विवेक को जगाया है परन्तु इसके कारण वर्तमान युग का मानव विवेकषील और तर्कषील होने के साथ ही शंकालु, एकांकी और अहमषील बन गया है। बौद्धिक प्रवृत्ति ने भावात्मक सम्बध भी अधिकतर चटका दिए हैं। बौद्धिकता का सम्बन्ध विवेक से होता है लेकिन मनुष्य बुद्धि या विवेक के माध्यम से अपने अच्छे–बुरे का ज्ञान करता है परन्तु आज के युग में केवल लाभ–हानि के विषय में सोचता है और नैतिकता का सम्बन्ध मानवीय मूल्यों या जीवन मूल्यों से होता है परन्तु नैतिकता का पतन दिन–प्रतिदिन होता जा रहा है, जो मनुष्य के अपनेपन की भावना न होने की वजह से है। 'तिरिया जात न जाने कोई' ;अनीता सभरवालद्ध उपन्यास में गौरा का भाई प्रदीप अपनी माँ के साथ सही व्यवहार नहीं करता है जबकि उसने माँ–बाप के पैसे का खूब ऐष के लिए इस्तेमाल किया लेकिन गौरा की भाभी भी उसके साथ सही व्यवहार नहीं करती है। गौरा को जब इस बात का पता चलता है तो वह मम्मी को अपने साथ ले जाना चाहती है तो गौरा का भाई प्रदीप कहता है

''मुझे क्या ऐतराज है, जाएँ तो उनके लिए भी अच्छा होगा और हमारे लिए भी। उनके डॉक्टरों के झंझट ही खत्म नहीं होते।''[3]

इस प्रकार प्रदीप बुढ़ापे में अपनी माँ को नही रखना चाहता है। वह सिर्फ अपनी लाभ–हानि ही देख रहा है।

3. **जीवन शैली :** वर्तमान में मनुष्य की जीवनषैली में बहुत बदलाव आया है। भूमंडलीकरण के कारण मनुष्य की जीवन शैली में अधिक परिवर्तन के साथ–साथ, पाष्चात्यम संस्कृति का भी मनुष्य जीवन पर प्रभाव पड़ा है। डॉ0 पुष्पाल सिंह लिखते हैं ''21वीं शती में भूमंडलीकरण, अमेरिकीकरण की जो आँधी चली उसका दूसरा पक्ष सांस्कृतिक है जो किसी भी प्रकार आर्थिक पक्ष से कमतर नही है। इस सांस्कृतिक आक्रमण की आँधी आर्थिक से भी अधिक तीव्र गति से आई जिसने हमारी सांस्कृतिक जड़ों को पूरी तरह हिला डाला है। अब तक जितनी भी विदेषी संस्कृतियाँ विभिन्न आक्रमणकारियों द्वारा भारत में लाई गई या थोपी गई वे हमारे जीवन–परिवेष में पूरी तरह घुल–मिल गई थी। कुछ सौ वर्षो बाद उनकी अलग पहचान भी न रह गई, वे भारतीय संस्कृति के महानद से समाकर एकमेक हो गई, उन्हें हमने अच्छी तरह आत्मसात कर लिया, पूरी तरह पचा लिया, किंतु इस संस्कृति ने हमारी निजता, संस्कृति के सबकुछ जो को हटाकर अपना स्थान ग्रहण कर लिया।''[4]

ग्लोबलाइजेषन के युग में बाजारवाद व्युह रचनाएं किस प्रकार भारतीय जनता की जीवन शैली में परिवर्तन लाती है 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में 'अलका सरावगी,' लेखिका ने दर्षाया है कि ''इस पोस्ट ग्लोबल दुनिया में जवान दिखना, वजन घटाना, अरबों डॉलरों का कारोबार है लेकिन कम से कम इंडिया में ज्यादातर लोग यह नहीं चाहेंगे कि किसी को पता चले कि वे इस तरह के कार्यों के लिए पैसे खर्च कर रहे हैं''[5] आज के युग में मानव की जीवन शैली को विज्ञापन भी अधिक प्रभावित करते हैं।

4. **मूल्यों का विघटन :** मूल्य समाज के जीवन को व्यवस्थित व सुषासित करता है। यह सामाजिक, धार्मिक, नैतिक व सांस्कृतिक पक्षों की आधारषिला है। जो हमारे कार्य–कलापों, व्यवहारों और सामाजिका व्यवहारों को मर्यादित करता है। वहीं जीवन मूल्य हमारे जीवन का आन्तरिक धर्म है। 'मूल्य' मानव जीवन को स्थायी ही नही बनाता है बल्कि उसे अन्य कई महत्वपूर्ण उपादानों से उत्कृष्ट भी करता है जिसके बल पर सामाजिक व्यवस्था संचालित होती है। डॉ0 धीरजभाई वणकार मूल्यों के विषय में लिखते हैं कि ''मूल्य समाज के आधार बिन्दु हैं। जिनके द्वारा किसी समाज या देष की संस्कृति व सभ्यता निर्मित होती रहती है। आज भिन्न परिस्थितियों ने जीवन मूल्यों को विषेष रूप में परिवर्तित किया है मुख्यतः षिक्षा, आबादी, वैज्ञानिक प्रगति, भौतिकतावादी अवधारणा, नगरीकरण, औद्योगीकरण, राजनीति, व्यक्तिवाद तथा व्यक्तिचेतना व पाष्चात्य सभ्यता ने प्रभावित किया जिसके कारण भारतीय जीवन मूल्यों के संक्रमण की जो स्थिति आई

वह पिछले दषकों में नही थी। इन प्रवृत्तियों के कारण हमारे आचार–विचार, आदर्ष व व्यवहार में अन्तर आने लगा।''[6]

इक्कीसवीं शताब्दी में मनुष्य तनाव, कुंठा, निराषा, संत्रास से भरा जीवन जी रहा है। साथ ही मानव स्वार्थ और व्यक्तिवादिता से प्रेरित हो वह ऐसे–ऐसे कार्य भी करने लगता है जो समाज, राष्ट्र विरोधी हैं जो अपराधी व्यवहार की श्रेणी में आते हैं। वर्तमान युग में व्यक्ति व्याभिचार करना, चोरी करना, घूंस लेना, वेष्यावृति, दूसरों की हत्या करना, मद्यपान करना आदि बुरे कार्य करता है, जो मूल्य विघटन की पहचान है। आज मानव धन के लालच में गलत कार्य भी करने को तैयार रहता है। 2015 और 2016 को यदि हम देखें तो जाति, धर्म के नाम पर अनेक दंगें हुए हैं। यह सब मूल्यों के विघटन के कारण ही है।

इक्कीसवीं सदी में धन के कारण ही सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक पतन हो रहा है। अन्त में यही कहा जा सकता है कि षिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा जीवन मूल्यों की षिक्षा दी जा सकती है। षिक्षा के माध्यम से समाज की भावी पीढ़ी तैयार की जा सकती है, नैतिकता और मानवीयता की सीख दी जा सकती है लेकिन आज तो षिक्षा व्यापार बन गई है। डॉ0 पुष्पाल सिंह लिखते हैं ''उपभोक्ता और बाजारवाद ने हमारे सांस्कृतिक मूल्यों, आयामों एवं संस्थानों को क्षत–विक्षत कर दिया है। इसी दुर्दषा और वेदना को समेटे हुए हैं। हमारे अधिकांष विष्वविद्यालय, ज्ञान, शोध, सृजन एवं संस्कारों के मन्दिर न होकर क्षुद्र राजनीति, बड़बोलेपन, अंहकार, जातीयता, संकीर्णता, मर्यादाहीनता एवं अषैक्षणिक गतिविधियों के गढ बन गए हैं।''[7]

5. रिष्तों में विघटन : आधुनिक जीवन में भावना का स्थान स्वार्थ ने ले लिया है जिसके कारण प्रेम या स्नेह की परिभाषा भी बदलती हुई नए–नए रूपों में सामने आ रही है। अब व्यक्ति अपने भावात्मक सम्बंधों के बजाए अपनी सहूलियत और लाभ को देखता है। आज अर्थ प्रधान सामाजिक व्यवस्था के कारण वैयक्तिक स्वार्थों में अभिवृद्धि हुई है। परिवार के सदस्यों के बीच स्नेह, मधुरता और पारस्परिक विष्वास का अभाव तो रहता ही है। इक्कीसवीं सदी में रिष्तों में स्वार्थपन संवेदनहीनता आ रही है। 'इसी तरह संवेदनहीनता हमें वर्तमान साहित्यों में लेखकों की कलम के माध्यम से ही दिखाई दी है। 21वीं शती की उपन्यासकार 'ममता कालिया' ने 'दौड़' उपन्यास में सिद्धार्थ के माध्यम से दर्षाया है जो धन कमाने के लिए विदेष जाता है। एक दिन सिद्धार्थ को अपने अंकल से फोन पर पिता की मृत्यु की सूचना मिलती है तो वह इससे ज्यादा दुःखी नहीं होता है। सिद्धार्थ अंकल को विदेषी संस्कृति के विषय में बताता है ''आप मुरादाघर में रखवा दीजिए। यहाँ तो महीनों बॉडी मारच्युरी में रखी रहती है। जब बच्चों को फुर्सत होती है। फ्यूनरल कर देते हैं।''

सिद्धार्थ के अंकल उसे समझाते हैं कि हमारे देष की संस्कृति अलग है। हमारे देष में पिता की चिता को मुखागिनी उसका पुत्र देता है लेकिन सिद्धार्थ नहीं आता है वह अनेक बहाने बनाता है। इस प्रकार से रिष्तों का विघटन हर तरफ दिखाई देता है। संतान को माता–पिता के लिए ही समय नही है जिस माता–पिता ने उसे चलना सिखाकर, कमाकर खाने तक सिखा दिया यह रिष्तों का विघटन नही, तो क्या है? डॉ0 पुष्पाल सिंह लिखते भी हैं ''आज के सामाजिक जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि आज हमारे सभी सामाजिक संबंधों और पारिवारिक रिष्तों पर अर्थ तंत्र हावी हो गया है। आत्मीय रिष्तों की पहचान और परख तथा उन संबंधों के निर्वाह में अर्थ प्रधान दृष्टि प्रमुख हो जाने से आज संबंध निभाएं नहीं, ढोए जाते हैं।''[8] पहले संयुक्त परिवार से एकल परिवार हुए लेकिन आज भारतीय पारिवारिक संस्था अब लिव–इन–रिलेषनषिप तक आ गई है। आधुनिक युग में औद्योगिकीकरण, नगरीकरण और आजीविका के साधनों की विसंगतियों के कारण आज रिष्तों में विघटन पैदा हा रहा है। रिष्तों में विघटन विचारों में मतभेद, आर्थिक संकट और व्यक्तिवादी प्रवृति से होता है।

6. अजनबीपन व अकेलेपन की पीड़ा : आज भारतीय समाज का व्यक्ति चाहे उसकी दृष्टि परम्परागत हो या आधुनिक हो, लेकिन वह अकेलेपन व अजनबीपन के दर्द की छटपटाहट से व्याकुल है। आज व्यक्ति को जीवन व समाज की विसंगितयों के फलस्वरूप व्यक्ति को एकाकीपन, अजनबीपन और ऊब की अनुभूति होती है। सच तो यह है कि सम्बन्धों से टूटा हुआ पुरुष–स्त्री अधिक से अधिक अजनबीपन होते जा रहे। आज के मनुष्य को चारों और मृत्यु, संत्रास, अकेलेपन और अजनबीपन का बोध निगल रहा है। वर्तमान जीवन में मानवीय भावनाओं का महत्व कम होता जा रहा है और परायेपन का एहसास ज्यादा है। वर्तमान में स्त्री–पुरुष को अकेलेपन का एहसास उन दोनों के बीच किसी तीसरे का आ जाना है। तीसरा आकर दोनों में दरार पैदा करता है। आजकल कहा जाए तो पति–पत्नी को एक ही घर में रहते हुए तीसरे के कारण ही अजनबीपन और अकेलेपन का षिकार होना पड़ता है। आज घर में सबके पास फोन होते हुए भी मनुष्य अकेलेपन का षिकार है। क्यों? इस प्रष्न का उत्तर मनुष्य स्वयं से पूछे तो बेहतर है। हम तो केवल इतना ही कह सकते हैं कि आज तो मनुष्य केवल फोन को ही और धन को ही सब मान बैठा है लेकिन ऐसा नही है। शायद फोन तो मनुष्य के लिए बना है। फोन के लिए मनुष्य नही। आज के युग में लोग मंहगे से मंहगा फोन खरीद कर कवर भी महंगा लगाते हैं लेकिन शायद वे भूल जाते हैं कि यदि हम अपने फोन की भाँति यदि अपने घर में रहने वाले सदस्यों की भावनाओं की कदर करें तो शायद ठीक रहेगा। नही ंतो स्वयं और दूसरों को अंजाम पता ही होगा। सिर्फ जीवन में अकेलापन और अजनबीपन ही हाथ में रहेगा।

7. मषीन और मानव : 21वीं सदी शुरू होने से पहले मषीनी युग था। लेकिन आज के युग ने तो मषीनी मानव, मानव की सहयता के लिए बनाया गया है। लेकिन गत प्रोग्रामिक की वजह से मषीनी मानव,

मानव के लिए खतरा बन जाता है। क्रैम्ब्रिज विष्वविद्यालय के इंजीनियरिंग विभाग ने मदर रोबोट तैयार किया है। आज रोबोट मानव जीवन के लिए वरदान भी साबित हो रहा है। रोबोट रेस्तरां, होटलों, अस्पतालों, षिक्षा के अलावा रक्षा क्षेत्र में भी काम कर रहा है। विदेषों में रोबोट अर्थात मषीनी मानव का प्रयोग किया जा रहा है। 21वीं शताब्दी में मेड ;नौकरानीद्ध की जगह अब रोबोट ने ले रखी है। घर में साफ–सफाई से लेकर फूड प्रोसेसर कपड़े धोना तक का काम भी रोबोट के द्वारा किया जाने लगा है। एक ऐसी मषीनी मानव भी तैयार किया है जिसका नाम पेपर रोबोट है। यह एक ऐसा रोबोट है जो मानव का अकेलापन दूर करके उसका मन बहलायेगा और उसके अकेलेपपन को दूर करेगा। मषीनी मानव मनुष्य के लिए खतरनाक भी हो सकता है। क्योंकि कई जगहों पर कारखानों में गलत प्रोग्रामिंग होने के कारण यह मानव की हत्या भी कर देता है। आजकल रक्षा क्षेत्र में मषीनी मानव का प्रयोग किया जा रहा है।

8. आंतकवाद और साम्प्रदायिकता : आज के युग में आतंकवाद एक भयंकर समस्या है। 21वीं शताब्दी में विष्व के लगभग सभी देष आंतकवाद के षिकार हो चुके हैं। आज विष्व के विकसित और विकासषील देष आतंकवाद से नही बच पा रहे हैं। आतंकवाद वर्तमान युग में पूरे विष्व में अपना नेटवर्क स्थापित कर चुके हैं। पढ़े लिखे लोग बेरोजगारी व गरीबी के कारण इनसे जुड़ जाते हैं। आज आतंकवाद भूख, गरीबी, बेकारी, हिंसा से उत्पन्न संघर्ष है। आतंकवादी मारो और भागो की नीति में विष्वास रखते हैं। अर्थात यदि आतंकवादी हमलों में पकड़े जाते हैं तो स्वयं ही सुसाइड कर लेते हैं सुसाइड या आत्महत्या से यह बात ज्ञात हो जाती है कि जो आतंकवादी होते हैं वह अपना काले कार्य को अंजाम दे न दे लेकिन उसने कोषिष की ओर किसी संगठन से नाम जुड़े न जुड़े लेकिन वह अपना आतंक फैलाने का काम कर चुके हैं। 17 दिसम्बर 2014 को आतंकवादियों ने पाकिस्तान के आर्मी स्कूल पर हमला किया था। जिसमें 132 स्कूल के बच्चे मारे गए। 2016 में भारत के पंजाब राज्य के पठानकोट में हमला हुआ। कई जाने गई। इस प्रकार से आज भी हमारे देष में यह आतंक बना रहता है कि किसी भी जगह साधारण मानव भी आतंक का षिकार हो सकता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि इक्कीसवी शताब्दी को अपने वाले समय में इन बिन्दुओं को पहचाना जा सकेगा। इस युग में सोच में परिवर्तन, विकृत जीवन शैली, अकेलेपन के कारण मानव का जीवन कुंठा, संत्रास है और मन के रोगों से ग्रस्त है। आजकल गलत खान–पान की वजह से मनुष्य को शारीरिक बिमारियों का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन सोच में परिवर्तन के कारण इस समय मनुष्य मन के रोग कुंठा, तनाव, अवसाद और संत्रास से पीड़ित है। यदि मानव ने भी अपनी सोच में परिवर्तन तथा खान–पान पर ध्यान नही दिया तो हमारा शरीर और मन भी अनेक आतंक रूपी रोगों से घिर जाएगा। आने वाली पीढ़ी के विषय में सोचते हुए षिक्षा प्रणाली में भी सुधार किया जाना चाहिए। वर्तमान युग में आपाधापी वाली दौड़ में मनुष्य को मानवीय मूल्यों को नही भूलना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 पुष्पाल सिंह, ***'21वीं शती का हिन्दी उपन्यास,'*** पृ0 5
2. गोपाल कृष्ण शर्मा 'फिरोजपुरी', ***'दामिनी जिंदा है',*** पृ0 79
3. अनीता सभरवाल,, ***'तिरिया जात न जाने कई,'*** पृ0 147
4. डॉ0 पुष्पाल सिंह, ***'21वीं शती का हिन्दी उपन्यास,'*** पृ0 19
5. अलका सरावंगी, ***'एक ब्रेक के बाद,'*** पृ0 119
6. डॉ0 धीरजभाई वणकार, ***'कमलेष्वर की कहानियों का यथार्थ,'*** पृ0 178
7. डॉ0 पुष्पाल सिंह, ***'21वीं शती का हिन्दी उपन्यास,'*** पृ0 147
8. डॉ0 पुष्पाल सिंह, ***'समकालीन कहानी, युगबोध का संदर्भ,'*** पृ0 126